Deg-2
Sub.

शेरशाह का सार्वजनिक निर्माण कार्य

शेरशाह का सार्वजनिक निर्माण कार्य में भी बहुत रूचि थी। उसके द्वारा निर्मित सड़कें एवं सरायें इसकी पुष्टि करती है।

(i) सड़कों का निर्माण :- शेरशाह ने अपने साम्राज्य के विभिन्न भागों में सड़कों का जाल फैला दिया। उसने सड़कों के दोनों ओर छायादार वृक्ष लगवायें। उसके द्वारा निर्मित करवाई गई प्रसिद्ध सड़कों में निम्न थी - बंगाल के सोनार गांव से रोहतासगढ़ तक 1500 कोस लम्बी सड़क (यह सड़क आजम हुमायूँ) मुल्तान से लाहौर तक, बियाना से जोधपुर तक, बियाना से अजमेर तक, बनारस से मुंडेर तक एवं आगरा को सड़कों से जोधपुर, अजमेर, चित्तौड़ तथा खानदेश के साथ जोड़ दिया गया। इन सड़कों से यातायात का विकास हुआ। व्यापार का भी विकास हुआ। इससे राज्य की आय बढ़ी। डॉ खरे के अनुसार "सड़कों का सबसे महत्वपूर्ण काम यह हुआ कि लोगों में एकता की भावना प्रबल हुई, जिससे राष्ट्र-निर्माण के कार्यों को प्रोत्साहन मिला।"

(ii) सरायों का निर्माण - शेरशाह ने सड़कों पर दो-दो कोस के अन्तर पर सरायें बनवायी। उसने 1700 से 2000 सरायें बनवायी तथा उनमें उचित व्यवस्था की। सरायों में मुसलिम तथा ~~हिन्दुओं~~ हिन्दू यात्रियों के विश्राम तथा भोजन की

P.T.O

भोजन की उचित व्यवस्था थी। प्रत्येक सराय में ठंडा एवं गर्म पानी, बिस्तर और यहाँ तक की पशुओं के चारे का प्रबन्ध भी कर रखा था।"

(iii) डाक प्रबन्ध - शेरशाह ने डाक का भी अच्छा प्रबन्ध किया। सरायें डाक चौकी का काम करती थी। शाही डाक को एक सराय से दूसरी सराय में पहुंचाने हेतु प्रत्येक सराय के दो घोड़े तथा कुछ हरकारे होते थे। निजामुद्दीन के अनुसार इस उत्तम डाक व्यवस्था के कारण उसे सुदूर प्रदेशों की घटनाओं की शीघ्र सूचना मिल जाती थी।